❍ Year : 1 ❍ Issue : 1 (Part-2) ❍ August 2016 ❍ ISSN : 2456-0898

GLOBAL THOUGHT

ग्लोबल थॉट

(MULTI DISCIPLINE BILINGUAL RESEARCH JOURNAL)

(An International Refereed Quarterly Research Journal)

(A Scholarly Peer Reviewed Journal)

Patron :

Prof. M.M. Agrawal
(Former Dean, Arts Faculty & H.O.D. Sanskrit, University of Delhi, Delhi)

Prof. D.S. Chauhan
(Former H.O.D. Sanskrit, Magadh University, Bodhgaya, Bihar)

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक रूपेश कुमार चौहान द्वारा 47, ए-3 ब्लॉक, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, (नजदीक संकट मोचन मंदिर), पी.एस. नजफगढ़, दिल्ली से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली में मुद्रित।
सम्पादक-रूपेश कुमार चौहान
Ph. 09555222747, 09266319639, 7011805809

प्रकाशनार्थ सूचना

* लेखक से अनुरोध है कि शोध-पत्र वॉकमैन चाणक्य 905 या क्रुतिदेव फॉन्ट में वर्ड या पेजमेकर में टाइप (टङ्कण) कराकर शोध-पत्रिका के ई-मेल पर प्रेषित करें।

* शोध-लेख **हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में** न्यूनतम 1500 शब्द एवं अधिकतम 5000 शब्द तक मान्य है तथा इसके साथ लेखक का पद-नाम के साथ स्वयं की फोटो (छवि-चित्र) अत्यन्त अनिवार्य है।

* प्रकाशनार्थ प्राप्त लेख सलाहकार परिषद् एवम् संपादक मण्डल की अनुमति के पश्चात् स्तरीय होने पर ही प्रकाशित होगा।

* लेख में यदि चित्र का प्रयोग हुआ है तो उसे भी अवश्य प्रेषित करें।

* **'ग्लोबल थॉट'** किसी भी तरह के परामर्श का स्वागत करती है, इसलिए अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें।

* यह स्पष्ट किया जाता है कि शोध पत्र में प्रस्तुत तथ्य शोध लेखक के अपने विचार हैं तथा इसमें सलाहकार परिषद् एवं सम्पादक मण्डल के विचारों की सहमति होना आवश्यक नहीं है। अत: लेख के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

* शोध-पत्रिका की किसी भी सामग्री को प्रकाशक एवं मुद्रक की जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशन अनुचित होगा।

* अपेक्षित आर्थिक सहयोग अथवा अंशदान के लिए हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

* **कृपया लेख के साथ अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो अवश्य भेजें।**

© सर्वाधिकार सुरक्षित

सामान्य शुल्क		सदस्यता शुल्क	
वैयक्तिक शुल्क (एक प्रति)	**– ₹200**	**संस्थागत सदस्यता शुल्क (वार्षिक)**	**– ₹1500**
संस्थागत शुल्क (एक प्रति)	**– ₹400**	**पञ्च वार्षिक शुल्क**	**– ₹6000**
वैयक्तिक वार्षिक शुल्क (दिल्ली हेतु)	**– ₹800**	**आजीवन सदस्यता शुल्क**	**– ₹15000**
सदस्यता शुल्क व्यक्तिगत (वार्षिक) (दिल्ली से बाहर के लिए)	**– ₹1200**		

पत्र-व्यवहार का पता :
मकान नं.-41, सूरज नगर (दुर्गा मंदिर के सामने),
आजादपुर, दिल्ली-110033

सलाहकार परिषद् :

- **प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय**

(पूर्व कुलपति, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा)

- **महामहोपाध्याय प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री**

(पूर्व उप-कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

- **प्रो. शंकर दयाल द्विवेदी**

(संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

- **प्रो. राम सरेख सिंह**

(पूर्व विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)

- **प्रो. मोहम्मद मंसूर आलम**

(अध्यक्ष, उर्दू विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया)

- **प्रो. राम भरत सिंह**

(पूर्व विभागाध्यक्ष, राजनीति शास्त्र, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)

- **डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर**

(राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय दलित साहित्य अकादमी एवं प्रसिद्ध दलित चिंतक)

- **डॉ. विक्रमादित्य राय**

(अध्यक्ष, समाज-शास्त्र विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कॉलेज, (बी.एच.यू.) वाराणसी

- **डॉ. इन्द्र नारायण सिंह**

(बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)

- **प्रो. सत्यदेव पोद्दार**

(इतिहास विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)

- **प्रो. काशीनाथ जेना**

(राजनीति-शास्त्र विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)

सम्पादक मंडल :

- **डॉ. शाहिद तस्लीम**

(असिस्टेंट प्रोफेसर, उज्बेक भाषा विशेषज्ञ, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली)

- **डॉ. रसाल सिंह**

(असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली)

- **डॉ. मनोज कुमार सिन्हा**

(असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, पीजीडीएवी महाविद्यालय (प्रात:), दिल्ली)

- **डॉ. अरविन्द कुमार मीणा**

(असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वेंकटेश्वर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)

- **अजय कुमार**

(असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सत्यवती कॉलेज (प्रात:), दिल्ली विश्वविद्यालय)

- **डॉ. सुशील एम. तिवारी**

(असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), वनस्पति विज्ञान विभाग, दयाल सिंह कॉलेज (प्रात:)

सम्पादक :
डॉ. रूपेश कुमार चौहान
मो. 9555222747, 9266319639

उप सम्पादक :
डॉ. राजेश कुमार
मो. 9555666907, 8527907638

प्रबंध सम्पादक :
ठाकुर प्रसाद चौबे
मो. 9810636082

विधिक सलाहकार :
अरुण कुमार शुक्ला

ग्राफिक डिजाइनर :
कवल मलिक
जे.डी. कंप्यूटर्स, मो. 9818455819

- सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय हैं।
- **'ग्लोबल थॉट'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
- सारे भुगतान मनीआर्डर : चेक/ बैंक ड्राफ्ट **'वाक् सुधा'** के नाम से किए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चेक में बैंक कमीशन के 35.00 रुपये अतिरिक्त जोड़ें।

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय 5

Muslim Women Education : Status, Issues And Opportunities ---------- 6
Shomaila Warsi

यक्ष-युधिष्ठिर संवाद में पुरुषार्थ 11
दीपक कालिया

GST: Ushering India's Biggest Tax Reform ---------- 15
Kiran Gupta

आद्यन्तवदेकस्मिन् सूत्र में 'एकस्मिन्' पदविश्लेषण 18
हरीश कुमार

''काव्य हेतु'' एक समीक्षा 21
निर्मला एवं रूपेश कुमार चौहान

योग-दर्शन में ईश्वर 23
डॉ. धनपति देवी कश्यप

भारतीय वर्णव्यवस्था : वरदान या अभिशाप 27
रूपेश कुमार चौहान

भारतीय दर्शन में तत्त्व संख्या 31
डॉ. अनुज कुमार

आचार्य रामानन्द के मत में भक्ति 37
डॉ. राजेश कुमार

स्थानिवत्प्रकरण में अतिदेश विवेचन 48
हरीश कुमार

राजस्थान में आधुनिक शिक्षा के विकास में ईसाई मिशनरियों का योगदान 52
डॉ. अर्चना द्विवेदी

विभाजन का दंश और हिन्दी उपन्यास 60
रणजीत कुमार

दार्शनिक परिवेश और मुक्तिबोध 63
शैलेन्द्र कुमार

प्रबंध - एक अध्ययन 68
जितेन्द्र

भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा और भारतेंदुयुगीन लेखक 70
स्वाति सिंह

Asoka: Kalinga War to Universal Peace --- 77
Nguyen Van Tinh

भर्तृहरि के नीतिवचनों की प्रबन्धन शास्त्र की दृष्टि से उपयोगिता 81
मालती राघव

Neo Buddhist Movement and Dr B.R. Ambedkar ---------- 86
Dr. Harish Kr. Baluja

Buddhism Inbengali Literature ---------- 91
Rajani Kumari

गुप्तकालीन वस्त्र-उद्योग की स्थिति : एक पुनरावलोकन 97
डॉ. निधि सिद्धार्थ

The Great Scheme of Monastic Rules at the Second Buddhist Council ---------- 106
Le Viet Binh

Can Compound Verb Be Reversed In Hindi: An Inquiry Of Its Form And Function ------- 110
Pradeep Kumar Das

Mathematics in Ancient Sanskrit Texts ----- 127
Dr. Daya Shankar Tiwary

वास्तुशास्त्र की वर्तमान काल में प्रासंगिकता 131
डॉ. राज कुमार द्विवेदी

हिंदी महिला कथाकारों के उपन्यासों का समाज-भाषावैज्ञानिक अध्ययन (1980 के पश्चात्) 133
मोनिका देवी

राजनीतिक एवं दार्शनिक दर्पण में वाल्मीकि रामायण 137
डॉ. स्वर्ण रेखा

कबीर एवं तुलसी की वर्ण चेतना 139
डॉ. यशपाल

समवकार में छन्दोयोजना 145
डॉ. वेद प्रकाश डिंडोरिया

काश्मीर शैवदर्शन में मोक्ष-एक समीक्षा 148
डॉ. सत्यकाम शर्मा

पद्मपुराण में सृष्टि और प्रलय का समीक्षात्मक अनुशीलन 151
डॉ. आनन्द कुमार

साहित्यशास्त्र में अलंकार वर्गीकरण 157
सुभाष कुमार सिंह

Drought, Water Resources and Management: A Case Study of Bundelkhand ---------- 160
Ram Asre Singh

साहित्यशास्त्र में गुण वर्गीकरण 167
सुभाष कुमार सिंह

रमाबाई से पंडिता रमाबाई की जीवन यात्रा : एक अद्‌भुत विलक्षण व्यक्तित्व का निर्माण 169
डॉ. प्रतिभा

समकालीन हिन्दी दलित कविता में स्त्री स्वर 176
अश्वनी कुमार

Sikhism and Gender : Changing dynamics -- 179
Dr. Mridula Jha

भाषा साहित्य और मीडिया 185
डॉ. श्रीमती कैलाश गोयल
समकालीन संदर्भ में राजकाज की हिन्दी 192
डॉ. सीमा रानी
द्रौपदी का अप्रतिम व्यक्तित्व 195
डॉ. धनपति कश्यप
सगुण भक्तों का मानवतावादी अभियान (एकता के परिप्रेक्ष्य में) 199
प्रो. कैलाश नारायण तिवारी
मौर्यकालीन आर्थिक जीवन 202
डॉ. एम.एम. रहमान
आयुर्वेद में स्वस्थ जीवन के लिए पथ्य-अपथ्य आहार का स्वरूप 206
डॉ. सुषमा राणा
बालसाहित्य का बालमन पर प्रभाव 209
डॉ. चित्रा सिंह
मुक्तिबोध का बिंब-विधान 215
डॉ. प्रमोद कुमार द्विवेदी
असंवाद का हिमबिंदु और आज का नाटक 218
डॉ. आशा रानी
गुनाहों का देवता उपन्यास का साहित्यिक पाठ ... 223
डॉ. रीनू गुप्ता
नामवर सिंह की दृष्टि में दलित साहित्य 227
डॉ. चन्द्रशेखर राम
विद्यापति के गीतों का वैशिष्ट्य 231
डॉ. राम किशोर यादव
नागार्जुन के काव्य में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ 235
सुनीता खुराना
The Dialectics of Overcoming Slavery ----- 239
Dr. C. V. Babu
বাংলা ভাষায় প্রথম সমুদ্র নির্ভর জেলে জীবন : "এক হাতে দাঁড়, অন হাতে জাল" 244
* অনির্বাণ সাহু
अनुसंधान और आलोचना के अंत:संबंध 250
डॉ. लालजी
प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में अभिव्यक्त स्त्री-विमर्श 254
डॉ. सुनीता सक्सेना
श्रीमद्भागवत में 'सांख्ययोग' 258
डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा
Integration of Ethics in University Education and Research through Indian Philosophy of Value System ---------- 262
Dr. Pramod C. Sharma
सन्त रैदास की वाणी में रस्यानुभवपरक सन्दर्भ 266
डॉ. नागेश नाथ दास
ब्रॉडवे थियेटर और अमेरिकी रंगमंच 271
डॉ. सीमा जैन

सम्पादकीय

ग्लोबल थॉट सबकी पत्रिका है, जो बिना किसी पूर्वाग्रह के सभी पक्ष, पंथ, संप्रदाय, संस्था व विचारधाराओं पर लिखे गए रचनात्मक शोध को एक साथ प्रस्तुत करती है।

अपनी अद्‌भुत सामग्री के कारण पाठकों से जुड़ रही है। भाषा, शैली, कलेवर और चरित्र की दृष्टि से हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा की शोध पत्रिका है। इसके साथ सामग्री की दृष्टि से इसका सरोकार मानवीय है। यह ज्ञान का अद्वितीय संगम है। दोनों भाषाओं में इस समय उत्कृष्ट एवं बहुत ही गंभीर शोधकर्ता हैं। परन्तु उनको एक अच्छा मंच नहीं मिल पाता है। ग्लोबल थॉट एक ऐसा मंच है जहाँ प्रबुद्ध शोधार्थी अपने शोध को साधारण नागरिक के लिए उपयोगी बना सकते हैं। इसके साथ ही आम नागरिकों की चुनौतियों को समझकर ऐतिहासिक संदर्भों का उल्लेख करते हुए समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं।

यह पत्रिका शोध के क्षेत्र में मुख्यधारा की शीर्षस्थ पत्रिकाओं में अपना स्थान बना बनाएगी, ऐसी आशा है। देश के ख्याति प्राप्त प्रतिष्ठित विद्वानों की बनायी गयी 'सलाहकार परिषद्' और 'संपादक मंडल' के नेतृत्व में शोध आलेखों का प्रकाशनार्थ चयन किया जाता है। शोध आलेख का मूल्यांकन संदर्भ, सार्थकता और सरोकार के आधार पर किया जाता है। पत्रिका के संरक्षक, संपादक एवं अन्य सहयोगी सदस्यों का एकमात्र लक्ष्य शोध पत्रिका के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ विकल्प देना है। मेरे शोध अध्ययन और अध्यापन के समय कई बार शोधार्थी सहयोगी यह कहा करते थे कि शोध में वही सब कुछ करना पड़ता है, जो शोध निर्देशक चाहते हैं। मेरे मन की बात तो मन में ही रह गयी। शायद मैं अपने मन की बात कभी कह सकूँगा? ऐसे सभी शोधार्थियों का ग्लोबल थॉट में हार्दिक स्वागत है। इस पत्रिका के माध्यम से आप तर्क एवं प्रमाण सहित मन की बात भी कह सकते हैं।

वैश्वीकरण के दौर में भी ग्लोबल थॉट लोकहितकारी, नए शोध संस्कारों को विकसित करने के लिए दृढ़ संकल्पित है। आमतौर पर बड़ी पूंजी का दवाब विज्ञापन तथा पैसों का लालच शोध पत्रिका को पथ भ्रष्ट कर देता है, लेकिन ग्लोबल थॉट भय, लोभ एवं दवाब से मुक्त होकर अनुसंधानात्मक ज्ञान को राष्ट्र निर्माण के लिए लगाना चाहती है। देश आज रचनात्मक परिवर्तन के मुहाने पर खड़ा है। कई पुरानी परम्पराएं अप्रासंगिक हो रही हैं। अप्रासंगिकता के दौर में इस पत्रिका के प्रकाशन का उद्‌देश्य समाज के समक्ष भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता, भूगोल, इतिहास, राजनीति-शास्त्र, समाज-शास्त्र, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, पाली, प्राकृत, उर्दू, अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य विषयों के शोध लेख प्रस्तुत करना है तथा वे शोध लेख गवेषणात्मक होने चाहिए। लेख प्राचीन परम्पराओं से हटकर आत्म- अभिव्यक्तिपूर्ण होने चाहिये।

यद्यपि उपर्युक्त सभी विषय छात्रों को प्रारम्भ से लेकर अन्तिम कक्षाओं तक अध्यापित हैं, जिनसे उन विषयों का ज्ञान होना स्वाभाविक है अतः उन विषयों को यथा तथ्य प्रस्तुत करना शोध लेख का उद्देश्य नहीं है। लेख में लेखक की अपनी सोच होनी चाहिये तथा वह सोच संशोधनपरक होनी चाहिये। उसमें परोपकार की भावना का पुट परमावश्यक है, क्योंकि लेखक का मूल उद्देश्य परोपकार ही होता है।

जब इस पत्रिका में लेखक का यह प्रयोजन होगा, तभी पत्रिका अपने मूल प्रयोजन परोपकार को प्राप्त कर सकेगी। यह विदित हो कि अनुसन्धान पत्रिका में लिखित लेख का उच्च शिक्षा में अपना एक अलग महत्त्व है। इसमें प्रकाशित लेख लेखक की योग्यता में वृद्धि करते हैं। प्रायः लेखों में आत्माभिव्यक्ति के अभाव में पिष्टपेषण प्रवृत्ति ही अधिकतर परिलक्षित होती है। यह सब लेखक की अपनी आत्मा तथा विशेषज्ञ के प्रखर परीक्षण पर निर्भर है।

इस प्रकार पत्रिका 'ग्लोबल थॉट' अपनी अमृतवाणी सर्वत्र प्रसृत करती हुई समाज में कुप्रथाओं, कुरीतियों को मिटाने वाले शोधपरक लेखों द्वारा परोपकारपरक समाज की स्थापना करे, यही इसका मूल उद्देश्य है।

– डॉ. रूपेश कुमार चौहान